मोक्षदा एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Mokshada Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 39, controlling revision 336362. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 39 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 39 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.39.1–47, Sanskrit Wikisource revision 336362, not a transcription of the original text.

प्रश्न, नाम और आराधना

KATHA 6.39.1–13

तीन लोकों के स्रष्टा पुरुषोत्तम विष्णु को प्रणाम के बाद युधिष्ठिर लोकहित के लिए अपना संशय रखते हैं: मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी का नाम, देवता और विधि क्या है? कृष्ण प्रश्न की प्रशंसा करते और उससे यश मिलने का माहात्म्य कहते हैं। वे पिछली कथा में कृष्ण द्वादशी पर विष्णु के शरीर से उत्पन्न एकादशी का स्मरण करते हैं। देव-असुर-वध के लिए कहने वाला पद भी चुने पाठ में है; उसे बदलकर नई उत्पत्ति-कथा नहीं बनाई गई।

अगला पद उत्पत्ति को शुक्ल पक्ष से जोड़ता है, जबकि अंग्रेज़ी तुलना कृष्ण पक्ष कहती है। यह आंतरिक पक्ष-विरोध बताया गया है; इससे उत्सव की नई तिथि नहीं निकाली गई। फिर कृष्ण मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को मोक्षा बताते हैं, जिसे अलग समापन मोक्षदा कहता है। सुनने का फल वाजपेय यज्ञ के समान कहा जाता है।

दामोदर की तुलसी की मंजरी, धूप और दीप से पूजा तथा पहले बताई दशमी और एकादशी की विधि का संदर्भ आता है। इसका नया दशमी-विद्ध पंचांग निर्देश नहीं बनाया गया। नृत्य, गीत और स्तुति सहित जागरण और अधोगति में गए पितरों की मुक्ति का धार्मिक माहात्म्य है। दीप वैकल्पिक है; जलाएँ तो निगरानी रखें और सोने से पहले बुझाएँ। भोजन, पानी और नींद न रोकें। पूर्वजों की स्थिति या मुक्ति कोई प्रमाणित परिणाम नहीं और यह परिवार पर भय या अपराधबोध डालने का आधार नहीं।

After saluting Purushottama Vishnu as creator of the three worlds, Yudhishthira asks for public benefit: what are Margashirsha's bright Ekadashi's name, deity and method? Krishna praises the question and the fame it brings. He recalls Ekadashi arising from Vishnu's body on dark Dwadashi in the preceding account. The selected text also has a phrase about killing gods and asuras; it is not rewritten into a new origin narrative.

The next position places the origin in the bright fortnight, whereas the English comparison says dark. This internal fortnight contradiction is disclosed, not used to derive a new festival date. Krishna then names Margashirsha's bright Ekadashi Moksha, called Mokshada in the separate colophon. Hearing is assigned merit comparable with a Vajapeya sacrifice.

Worship of Damodara with flowering tulsi tips, incense and lamps refers back to earlier Dashami and Ekadashi observances. No new Dashami-joined calendar instruction is derived. A vigil with dance, song and praise and release of ancestors in lower states are religiously praised. Lamps are optional; attend them and extinguish before sleep. Do not withhold food, water or sleep. Ancestors' condition or release is not a verified outcome, nor a basis for frightening or burdening families with guilt.

वैखानस का स्वप्न और पर्वत से भेंट

KATHA 6.39.14–32

चम्पक नगर के वैखानस राजा अपनी प्रजा को पुत्रों की तरह पालते हैं। समृद्ध नगर में वेद और वेदांग जानने वाले विद्वान हैं; अंग्रेज़ी तुलना का उपनिषद पद चुपचाप मूल के स्थान पर नहीं रखा गया। स्वप्न में राजा अपने अनेक पितरों को नरक में पीड़ित देखते हैं। वे रोकर सहायता माँगते हैं। कथा आगे पिता पर केन्द्रित होती है, लेकिन आरम्भ का बहुवचन नहीं हटाया गया।

राजा विद्वानों से कहते हैं कि धन, घोड़े, हाथी, पत्नी और पुत्र अब आनंद नहीं देते। हृदय व्यथित है; वे किस स्थान, व्रत, तप या योग से पिता की सहायता कर सकते हैं? समृद्ध जीवित पुत्र और नरक में पिता की तुलना उनका प्रश्न है, परिवार के लिए आरोप नहीं। मृत संबंधी के बारे में कोई स्वप्न वास्तविक परलोक का प्रमाण नहीं।

विद्वान निकट के पर्वत मुनि बताते हैं, जो भूत और भविष्य जानते हैं। राजा ब्राह्मणों और अन्य राजाओं के साथ आश्रम पहुँचते हैं। ऋग्, यजुः और साम जानने वाले मुनियों के बीच पर्वत ब्रह्मा जैसे दिखाई देते हैं। राजा चरणों को प्रणाम करते हैं। मुनि राज्य के सात अंगों की कुशल और राजा के संतोष की पूछते हैं। राजा उनकी कृपा से कुशल और विष्णु तथा ब्राह्मणों के प्रति भक्ति कहते हैं, फिर अपनी पीड़ा बताते हैं: स्वप्न में पिता को कष्ट देखा, उसका कारण और मुक्ति का उपाय चाहते हैं।

King Vaikhanasa of Champaka cares for his subjects as sons. The prosperous city has scholars versed in Veda and Vedanga; the English comparison's Upanishads wording is not silently substituted. In a dream the king sees multiple ancestors suffering in hell. They weep and ask for help. The account subsequently focuses on his father, but its opening plural is retained.

He tells the scholars that wealth, horses, elephants, wife and son no longer bring joy. His heart is distressed; what place, vow, austerity or yoga could help his father? His question contrasts a prosperous living son with a father in hell; it is not an accusation directed at families. A dream about a deceased relative does not prove an actual afterlife condition.

The scholars name nearby sage Parvata, who knows past and future. The king goes to the hermitage with Brahmins and other kings. Among sages knowing Rig, Yajus and Sama, Parvata appears like Brahma. The king bows at his feet. The sage asks about the kingdom's seven constituents and the king's contentment. The king reports well-being through his grace and devotion to Vishnu and Brahmins, then shares his distress: he saw his father suffering in a dream and seeks its cause and a way of release.

कारण, अर्पण और पूरा समापन

KATHA 6.39.33–47

पर्वत थोड़ी देर ध्यान करके पूर्वज के पुराने कर्म का वृत्तांत कहते हैं। पिछले जन्म में पिता क्षत्रिय राजा थे। गर्व, सपत्नी-संबंधी शब्द, ऋतुकाल और राजकार्य से ग्राम की यात्रा के प्रसंग में अपनी पत्नी को छोड़ने और ऋतुदान न देने की बात आती है। अंग्रेज़ी तुलना इसे संभोग न करने की भाषा में समझाती है। यहाँ मूल का ऋतुदान और प्राचीन वैवाहिक कर्तव्य का संदर्भ रखा गया है; अस्पष्ट सपत्नी शब्द से नया विवाह-विवरण

नहीं बनाया गया। यह कथा की कारण-व्याख्या है, मृत व्यक्ति के वास्तविक कर्म या नरक का प्रमाण नहीं।

किसी विवाह में यौन अधिकार, दबाव, जबरदस्ती, गर्भधारण की बाध्यता या चिकित्सकीय निर्णय का समर्थन नहीं होता। राजा उपाय पूछते हैं। मुनि मार्गशीर्ष शुक्ल मोक्षा का व्रत परिवार या साथियों सहित करके उसका पुण्य पिता को अर्पित करने को कहते हैं और वचन की सत्यता ब्रह्मा-समान बताते हैं।

राजा लौटकर महीने की प्रतीक्षा करते हैं। समय आने पर समूह सहित व्रत करके पुण्य पिता को देते हैं। कथा में आकाश से फूल बरसते हैं; पिता अन्य पितरों सहित मुक्त होते हैं। आकाश से वे दो बार स्वस्ति कहकर पुत्र को आशीष देते और स्वर्ग जाते हैं। इसके बाद व्रत से पाप मिटने, मृत्यु के बाद मुक्ति, अगणनीय फल, भगवान को प्रिय होने और चिंतामणि-समान होने की प्रशंसा है। पढ़ने या सुनने का फल वाजपेय यज्ञ के समान कहा जाता है।

अलग समापन उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में अध्याय 39 को मार्गशीर्ष शुक्ल मोक्षदा कहता है; तत्काल संवाद कृष्ण–युधिष्ठिर का है। सभी 47 क्रमांकित स्थान और समापन इस मौलिक संक्षिप्त गद्य में पूरे हैं। अध्याय गीता की उत्पत्ति-कथा नहीं कहता; जुड़े गीता पाठ चयनित श्लोक हैं, पूरे अध्याय नहीं। पुण्य और परलोक धार्मिक कथा हैं, गारंटी नहीं। पूर्वज-स्मरण वैकल्पिक है; उपवास, जागरण, दान या खरीद आवश्यक नहीं। भोजन, पानी, विश्राम और देखभाल जारी रखें।

Parvata briefly meditates and describes the ancestor's former conduct. In a previous birth, the father was a Kshatriya king. In a passage involving pride, sapatni wording, ritukala and a village journey on royal duties, he left his wife and did not give ritudana. The English comparison explains this as not having intercourse. Here the original ritudana and ancient marital-duty context remain; ambiguous sapatni wording is not turned into an invented marriage history. This is the story's causal explanation, not proof of a deceased person's actual deeds or hell.

No marital sexual entitlement, pressure, force, compulsory pregnancy or medical judgment is endorsed. The king asks for a remedy. The sage recommends observing Margashirsha's bright Moksha with family or companions and offering its merit to the father, asserting the statement's truth with a Brahma comparison.

The king returns and waits for the month. When it arrives, he observes with the group and gives the merit to his father. In the narrative flowers fall from heaven; his father is released with other ancestors. From the air he twice says svasti, blessing his son, and goes to heaven. The close praises removal of sin, liberation after death, immeasurable reward, dearness to the Lord and resemblance to Chintamani. Reading or hearing is assigned a Vajapeya sacrifice's merit.

The separate colophon identifies chapter 39 as Margashirsha's bright Mokshada within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue; the immediate conversation is Krishna–Yudhishthira. All 47 numbered positions and the colophon are covered in this condensed original prose. The chapter does not tell a Gita origin story; linked Gita readings are selected verses, not complete chapters. Merit and afterlife outcomes are religious narrative, not guarantees. Ancestor remembrance is optional; fasting, vigils, gifts and purchases are not required. Food, water, rest and care continue.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Mokshada Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.39.1–47, revision 336362, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.